Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 2039–2043

NEW NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 AND TRADITIONAL VALUES OF INDIAN EDUCATION

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय शिक्षा के परम्परागत मूल्य

Poonam Mishra [1], Surmila Yadav [2]

[1] Professor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

ABSTRACT

English: Ancient Indian education was value-based, including the Gurukul system and the world-famous "Nalanda and Takshashila Universities". Value-based education policy reforms were the basis for using knowledge for the benefit of mankind. Ancient India had knowledgeable personalities like Sushruta, Aryabhatta, Panini and Chanakya, who set examples before the world. The long-term impact in the national education system is the change from the 10+2 pattern to 5$3$3$3$4. This decision will bring a major change in the Indian education system after three decades. The new National Education Policy is promoting Indian value-based education with emphasis on holistic education, India-centric education, development of knowledge-based society, and knowledge-based education.

Hindi: प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्य आधारित थी, जिसमें गुरुकुल प्रणाली और विश्व प्रसिद्ध "नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय" शामिल थे। मूल्य आधारित शिक्षा नीति सुधार मानव जाति के लाभ के लिए ज्ञान का उपयोग करने का आधार थे। प्राचीन भारत में सुश्रुत, आर्यभट्ट, पाणिनि और चाणक्य जैसे ज्ञानी व्यक्तित्व थे, जिन्होंने दुनिया के सामने उदाहरण प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में दीर्घकालिक प्रभाव 10$2 पैटर्न से 5$3$3$3$4 में बदलाव है। यह निर्णय तीन दशकों के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव लाएगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति समग्र शिक्षा, भारत-केंद्रित शिक्षा, ज्ञान आधारित समाज के विकास और ज्ञान आधारित शिक्षा पर जोर देने के साथ भारतीय मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा दे रही है।

Keywords: Traditional Values, Indian Education, Value-Based Education, New National Education Policy 2020, परम्परागत मूल्य, भारतीय शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

Corresponding Author
Surmila Yadav,
surmilayadav16@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6185

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

शिक्षा क्षेत्र में तीन दशकों के बाद एनईपी में नैतिक मूल्य सुधार दुनिया के लिए मजबूत चरित्र और मूल्यों के निर्माण के लिए क्रांतिकारी हैं, खासकर तब जब समाज में नैतिक मूल्यों का बहुत बड़ा संकट है।

2. प्राचीन भारतीय मूल्य-आधारित शिक्षा

प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्य-आधारित थी जिसमें गुरुकुल (जहाँ छात्र अपने शिक्षकों के घर में रहते हैं और अध्ययन करते हैं) प्रणाली और विश्व प्रसिद्ध नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय (विद्यापीठ) शामिल थे। मूल्य-आधारित शिक्षा नीति सुधार मानव जाति के लाभ के लिए ज्ञान का उपयोग

करने का आधार थे। प्राचीन भारत में सुश्रुत, आर्यभट्ट, पाणिनि और चाणक्य जैसे ज्ञानी व्यक्तित्व थे जिन्होंने दुनिया के सामने उदाहरण पेश किए- आरती शर्मा (2018) ने बताया किया कि विद्यार्थी से सामाजिक, बौद्धिक और राजनीतिक संदर्भों को बदलने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली प्राप्त करने की अपेक्षा की जाती है।

3. शिक्षा से मूल्यों का संबंध

शिक्षा मानवता के बारे में बुनियादी तथ्यों को सीखने की दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास है। और मूल्य शिक्षा के पीछे मुख्य विचार छात्रों में आवश्यक मूल्यों का विकास करना है। मूल्य शिक्षा सभी को उनके द्वारा धारण किए गए मूल्य प्रणाली को बेहतर बनाने और उनका उपयोग करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है।

4. भारत में मूल्य शिक्षा का महत्व

प्राचीन काल से ही भारत में मूल्य शिक्षा का बहुत महत्व रहा है। गुरुकुल स्तर से ही बच्चो ने न केवल पढ़ने और तीरंदाजी के कौशल सीखे, बल्कि जीवन के दर्शन को भी उसकी नश्वरता के संबंध में भी सीखा। इसलिए, भारत में शिक्षा का जन्म इस दृष्टिकोण से हुआ कि ईश्वर की चिंगारी के रूप में परम में अपने अनुभव को प्राप्त किया जाए और इस प्रक्रिया में ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ अपने कर्तव्य का पालन भी किया जाए। विद्यार्थियों में सांस्कृतिक मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य, सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय एकीकरण और चरित्र निर्माण जैसे मूल्यों को आत्मसात किया गया।

5. मूल्य आधारित शिक्षा के उद्देश्य

आधुनिक दिनों में, सभी शिक्षण पेशेवर तकनीकी उपकरणों और शैक्षणिक प्रथाओं से लैस हैं। उन्हें शिक्षण पेशे से जुड़ी बढ़ती मांगों की भरपाई करने के लिए सेवा करने की आवश्यकता है। उद्देश्यों के इस दत्तकार्य के कारण एनईपी और मूल्य आधारित शिक्षा के बीच अंतर्संबंध का सिद्धांत स्थापित करना आसान होगा।

6. मूल्य शिक्षा को पूरा करने से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट उद्देश्य

1) छात्रों में नैतिक, आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक मूल्यों को जोड़ने के लिए विश्व शांति को विकसित करने के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना।
2) देश और दुनिया के विकास के शुद्ध इरादे के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मानवता के दृष्टिकोण वाले समुदाय को विकसित करने के लिए उपयोगी मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना।
3) मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना जो शामिल गतिविधियों से संबंधित नैतिकता की पहचान करने के लिए उपयोगी होगी, जो आलोचनात्मक सोच के लिए शिक्षा के कार्यान्वयन से संबंधित होगी।
4) बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना जो दूसरों को प्रेरणा प्रदान करने वाले आत्मनिर्भर जीवंत व्यक्तित्व को लागू करने के लिए उपयोगी होना चाहिए।
5) मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना जो छात्रों को अपने स्वयं के मूल्यों के बारे में सोचने और उन्हें स्पष्ट करने और दूसरों के साथ उनकी तुलना करने के अवसर प्रदान करने के लिए उपयोगी होगी।
6) मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करना जो निर्देशात्मक ई-सामग्री सामग्री और पाठ योजनाओं को विकसित करेगा जिसके साथ मूल्यों को प्रभावी ढंग से पढ़ाया जा सकता है।
7) ऐसे तरीकों को लागू करना जिससे शिक्षा सहिष्णुता, सहयोग की भावना और टीम वर्क जैसे कुछ सामाजिक मूल्यों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करेगी।

7. एनईपी 2020 वास्तव में क्या है?

नई एनईपी 2020 की संरचनाः-

भारतीय शिक्षा मंत्रालय ने एनईपी 2020 को लागू कर दिया है। भारत भर के सभी स्कूल एनईपी के आधार पर छात्रों को शिक्षित करेंगे। स्कूली शिक्षा पैटर्न की पिछली शिक्षा नीति चरण 5$3$3$4 में बदल रही है। ये चरण इस प्रकार हैंः-ऽ

चरण 1: आंगनवाड़ी/प्रीस्कूल/बालवाटिका: 3 से 6 वर्ष की आयु के छात्र खेल और अन्य शिक्षण गतिविधियों में शामिल होंगे।

चरण 2: आधारभूत चरण (कक्षा 1-2): 6 से 8 वर्ष की आयु के बच्चे केवल बहुस्तरीय, खेल/गतिविधि-आधारित शिक्षण का अध्ययन करेंगे।

चरण 3: प्रारंभिक चरण/प्राथमिक स्तर (कक्षा 3-5): 8 से 11 वर्ष की आयु के छात्र खेल-खेल में गतिविधियाँ सीखेंगे और खोजपूर्ण शिक्षण तथा इंटरैक्टिव कक्षा शिक्षण में शामिल होंगे।

चरण 4: मध्य चरण (कक्षा 6-8):11-14 वर्ष की आयु के छात्रों को विज्ञान, गणित, कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों में अनुभवात्मक शिक्षा प्राप्त होगी।

चरण 5: माध्यमिक चरण (कक्षा 9-12): 14-18 वर्ष की आयु के छात्र बहु-विषयक अध्ययन में शामिल होंगे, उनके पास विषयों का विकल्प होगा, इत्यादि।

8. नई एनईपी 2020 की महत्वपूर्ण मूल्य-आधारित विशेषताएँ

हालाँकि, स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के लिए भारत एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएँ उनके कार्यान्वयन के स्तरों के अनुसार निम्नानुसार वर्णित हैं:

1) स्कूली शिक्षा में मूल्य:-
   1) स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित की जाती है। बचपन की देखभाल प्रदान की जाती है और नई पाठयचर्या और शैक्षणिक संरचना प्रस्तावित की जाती है, इसलिए सामुदायिक सीमा मूल्य में वृद्धि होती है।
   2) नई शिक्षा पद्धति के साथ, बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को पूरा किया जाता है ताकि खेल और सीखने की गतिविधियाँ पूरी की जा सकें।
   3) प्रस्तावित नीति में बहुभाषावाद को मंजूरी दी गई है, इसलिए अखंडता और सामाजिक बंधन बढ़े हैं।
   4) प्रस्तावित नीतियों में मजबूत शिक्षक भर्ती और कैरियर के साथ समावेशी शिक्षा है, इसलिए प्रशिक्षक को प्रशिक्षित करें, और समावेशी मूल्यों का प्रस्ताव है।
   5) प्रस्तावित नीति में केवल स्कूल स्तर पर मूल्यांकन सुधार और शासन के लिए मंजूरी है। इसलिए सत्ता का विकेंद्रीकरण बढ़ा है।
2) उच्च शिक्षा में मूल्य:-
   1) सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का छह प्रतिशत शिक्षा के लिए प्रस्तावित है। स्कूल की फीस छात्र के प्रदर्शन की श्रेणी के अनुसार तय की जाएगी ताकि प्रयासों के मूल्य में वृद्धि हो।
   2) छात्रों को आलोचनात्मक सोच कौशल के लिए प्रेरित किया जाता है।
   3) शिक्षा के दौरान, छात्रों की सामाजिक, आर्थिक क्षमता के अनुसार, कई बार बाहर निकलने या प्रवेश करने की संभावना है।
   4) छात्रों को आत्म-मूल्यांकन की सुविधा प्रदान की जाती है। शिक्षकों की टिप्पणियाँ मददगार होती हैं, लेकिन छात्र अपना आत्म-मूल्यांकन करते हैं, इसलिए उन्हें पता होता है कि उनका प्रदर्शन किस स्तर पर है और आत्मनिर्भरता का मूल्य बढ़ता है।
   5) छात्रों को अपने साथियों के काम के बारे में फीडबैक देना होगा। इससे टीम भावना और सहकर्मी सीखने की भावना बढ़ती है। इसलिए सामाजिक अखंडता के मूल्यों में वृद्धि होती है।
   6) शीर्ष 50 विदेशी विश्वविद्यालय भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रवेश कर सकते हैं। इससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।
   7) स्कूल/कॉलेज में अलग-अलग छात्र-केंद्रित विभाग होंगे जैसे पाठयक्रम, बुनियादी ढाँचा, छात्रवृत्ति, इत्यादि। इसलिए आलोचनात्मक सोच के साथ छात्र-केंद्रित गतिविधियाँ बढ़ेंगी।

इस प्रकार, मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए एनईपी का मसौदा तैयार किया गया है।

9. नई शिक्षा नीति 2020 का विश्लेषण

एनईपी 2020 में 10$2 पैटर्न से 5$3$3$3$4 में बदलाव के साथ गहरा दीर्घकालिक प्रभाव पैदा करने की क्षमता है। यह निर्णय तीन दशकों के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव लाएगा। यह बदलाव समय की मांग थी क्योंकि छात्रों की क्षमता को निष्पक्ष और सटीक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। सबसे महत्वपूर्ण उपाय बोर्ड परीक्षा को नई संरचना प्रस्तुत करना और उच्च शिक्षण संस्थानों को स्वायत्तता प्रदान करना है। यह नीति कार्यान्वयन के नौकरशाही तरीके की बाधाओं को कम करती है। यह देश में उच्च शिक्षा के लिए एक नया क्षितिज स्थापित करती है, जो बदले में

छात्रों के लिए अवसरों के नए द्वार खोलती है। कौशल निर्माण के लिए बहु-विषयक संस्थान प्रस्तावित एनईपी 2020 का परिणाम हैं। संक्षेप में, प्रस्तावित नई शिक्षा नीति छात्रों के समग्र और समग्र बहुआयामी विकास के लिए उपयोगी है (हायर एजुकेशन डाइजेस्ट, 2020)।

एनईपी भारतीय मूल्य-आधारित शिक्षण अधिगम पारिस्थितिकी तंत्र को कैसे संबोधित कर रही है?

पारंपरिक भारतीय मूल्य-आधारित पारिस्थितिकी तंत्र और एनईपी अंतर्संबंध को निम्नलिखित तरीकों से स्थापित किया जा सकता है

- सर्व-समावेशीता
- समग्र शिक्षा का विकास
- भारत-केंद्रित शिक्षा
- ज्ञान-आधारित समाज का विकास
- ज्ञान-आधारित शिक्षा पर जोर

इन सभी बिंदुओं को निम्नानुसार समझाया जा सकता है।

10.सर्व-समावेशीता

1) श्री कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा एनईपी का मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया में प्रत्येक ग्राम पंचायत को शामिल किया गया।
2) इस एनईपी के दृष्टिकोण के माध्यम से लगभग 2 करोड़ स्कूली छात्र जो बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं, वे वापस शैक्षणिक संस्थानों में शामिल हो सकेंगे।
3) एनईपी 2020 के अनुसार, 5$3$3$4 संरचना मौजूदा 10$2 संरचना की जगह लेगी। इसलिए सर्व-समावेशीपन प्राप्त किया जा सकता है। यह संरचना छात्रों के सीखने के प्रारंभिक वर्षों पर केंद्रित है। यह 5$3$3$4 संरचना 3 से 8, 8 से 11, 11 से 14 और 14 से 18 वर्ष की आयु के अनुरूप है। कुल मिलाकर, 12 साल की स्कूली शिक्षा है, अगर आंगनवाड़ी और प्रीस्कूलिंग को इस संरचना में शामिल किया जाए तो 3 साल।
4) 8 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय पाठयक्रम और शैक्षणिक प्रणाली को एक सुयोग्य राष्ट्रीय संस्थान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा डिजाइन और विकसित किया जाएगा।
5) परियोजना आधारित शिक्षा, जीवन कौशल सीखना, तथा कम उम्र में ही प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करना, बच्चों की महत्वाकांक्षाओं को साकार करने, बहुआयामी ज्ञान और सार्वभौमिक कौशल प्राप्त करने में सहायक है। यह मूल्य आधारित शिक्षा उच्च शिक्षा की नींव रखेगी। इसके अलावा, स्वयं, साथियों और शिक्षकों के मूल्यांकन की एक नई प्रणाली माता-पिता और बच्चों को शैक्षणिक वर्ष के दौरान सीखे गए नए कौशलों के साथ 360 डिग्री प्रगति रिपोर्ट देगी।

11.समग्र शिक्षा का विकास

छात्रों को आत्मनिर्भर और पूर्ण बनाने के लिए, शिक्षार्थियों के विश्व समग्र विकास का प्रस्ताव इस प्रकार है:

1) एनईपी ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर देते हुए ज्ञान आधारित समाज पर काम करने पर ध्यान केंद्रित किया है। बिना किसी परीक्षा के, प्राथमिक वर्षों में गेमिंग शिक्षा प्रदान की जाएगी। इसका परिणाम यह होगा कि कोई तनाव नहीं होगा और कोई परीक्षा नहीं होगी, बल्कि कक्षा 1 और 2 का पाठयक्रम पूरा हो जाएगा। छात्रों का स्कूलों के प्रति लगाव बढ़ेगा और स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या अपने आप कम हो जाएगी।
2) (ब) प्रारंभिक स्तर पर, कक्षा 3 से 5 में एनईपी का परिणाम क्षेत्रीय भारतीय भाषा को प्राथमिकता देते हुए पूरी तरह से गतिविधि-आधारित शिक्षा के साथ पूरा होता है। मिडिल स्कूल स्तर पर, यानी कक्षा 6 से 8 तक, छात्रों को बागवानी, सिलाई आदि जैसे अपने पसंदीदा क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्रदान की जाती है। परिणाम यह है कि छात्र प्रारंभिक स्तर पर कंप्यूटर, कोडिंग और गणित सीखते हैं।
3) माध्यमिक विद्यालय स्तर (कक्षा 9-12) पर, विज्ञान, वाणिज्य और कला में पाठयक्रम के आधार पर आलोचनात्मक सोच और कौशल विकास को बढ़ावा दिया जाता है।

उपरोक्त सभी बिंदु समग्र शिक्षा की ओर ले जाएंगे।

12.भारत-केंद्रित शिक्षा

वैश्विक दुनिया और भारत-केंद्रित मूल्यों को एनईपी 2020 में छात्रों द्वारा सीखा जाना है। संस्कृति और भाषाओं को मिलाकर भारत-केंद्रित मूल्यों का सम्मिश्रण किया जाता है। ज्ञान आधारित समाज का विकास व्यावहारिक और कौशल आधारित ज्ञान प्रदान किया जाता है। ज्ञान आधारित शिक्षा पर जोर:-

शिक्षा के साथ-साथ रचनात्मकता को निम्नलिखित तरीकों से प्रदान किया जाता है:

1) प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को बढ़ावा देना, पहचानना और पहचानना। ये सभी क्रियाएँ शिक्षकों और अभिभावकों के विकास की ओर ले जाती हैं।
2) ग्रेड 3 तक प्रत्येक बच्चे को मूलभूत साक्षरता को प्राथमिकता देना।
3) जीवन में अपनी रुचि के पथ को चुनने के लिए शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाना और बहु-विषयक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करना।
4) कला, वाणिज्य और विज्ञान के बीच कोई कठोर अंतर न करना और सामाजिक प्रभाव मूल्य-आधारित शिक्षा कार्यान्वयन की स्थिरता प्रदान करना।
5) व्यावसायिक कार्यक्रम को प्राथमिकता देना।
6) शिक्षार्थियों को लचीलापन प्रदान करना और ज्ञान के एकीकरण को लागू करना।
7) ज्ञान तक समान पहुँच की अनुमति देना।

13.निष्कर्ष

एनईपी समग्र शिक्षा, भारत-केंद्रित शिक्षा, ज्ञान-आधारित समाज के विकास और ज्ञान-आधारित शिक्षा पर जोर देने के साथ भारतीय मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है। कॉलेज पहुंचने से पहले छात्र बेहतर तरीके से तैयार होंगे, उन्हें अपने जुनून और रुचियों को तलाशने के अवसर मिलेंगे और वे बेहतर तरीके से पढ़ाई करना सीखेंगे। टीमवर्क, लचीलापन और संचार में वृद्धि होगी। कुल मिलाकर, एनईपी एक अच्छा सौदा लगता है (इंडिया टुडे, 2020)। समकालीन विश्व परिदृश्य में और विशेष रूप से एनईपी -2020 के तहत, शिक्षा में नैतिकता, सहानुभूति, सम्मान, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, समानता और बहुलवाद जैसे सभी जीवन मूल्य शामिल हैं। संचार, सहयोग, टीमवर्क और लचीलापन जैसे जीवन कौशल भी मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली का हिस्सा हैं।।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अस्थाना, एम. एवं वर्मा, के. बी. (2008). व्यक्तित्व मनोविज्ञान. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
कुमार, डी. (2012). समाजशास्त्र. नई दिल्ली: टाटा मैकग्रा हिल एजूकेशन लिमटेड।
गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
राय, पी. (2011). अनुसंधान परिचय. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन।
वोहरा, ए. आर. (2006). मानसिक स्वास्थ्य और मनःचिकित्सा. दिल्ली: आर्य प्रकाशन मंडल।
पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
शर्मा, डी. एल. (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो ।
सिंह, रामपाल सिंह, नगेन्द्र एवं सेवानी, अशोक. (2012). शिक्षा एवं समाज, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।